मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-12
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2312**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Puran (पुरन)

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 12, 28 Aug 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	3	9	0	4	8

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 148½ टिप्पणी (Remarks): /

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-5114

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
1-11

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

किंचित अशुद्धियों पर ध्यान दें।
परिचय दक्षता अच्छी है।
उत्तर तथ्यात्मक हैं।
भाषा प्रवाहमय है।
निष्कर्ष ठीक है।
प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

उत्तर अच्छे हैं।
अभ्यास करते रहें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।

तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

संदर्भ :- प्रस्तुत मुक्तक रीतिसिद्ध काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि बिहारी द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है। आधुनिक काल में इसका संकलन जगन्नाथ दास रत्नाकर ने किया है।

प्रसंग : यद्यपि बिहारी श्रृंगार रस के कवि है किंतु इन पंक्तियों में बिहारी का भक्ति-भाव प्रदर्शित हुआ है।

व्याख्या :-
कवि, ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति दर्शाते हुये कहते है कि हे प्रभु आपने मेरी पुकार को अनसुना कर दिया है। मैं गुहार लगाते-लगाते थक गया हूं, लेकिन आपने मुझे ऐसे त्याग दिया है। जैसे हाथी को तारने के बाद आप थक चुके हो और अन्य को तारना नहीं चाहते।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

काव्य - सौंदर्य -

- भाषा - परिष्कृत ब्रज भाषा
- रस - भक्ति रस
- अलंकार - अनुप्रास (बिरुद बारु बारनु)। रूपक तथा उपमा अलंकार। (कवी से तुलना)
- छंद - दोहा

भाव- सौंदर्य -

- यह दोहा उन गिने-चुने दोहों में जहाँ बिहारी ने 'श्रृंगार रस' छोड़कर 'भक्ति-भावना' का प्रदर्शन किया है।
- ब्रजभाषा का सौंदर्य प्रभावपूर्ण है।

विलासितापूर्ण वातावरण से ऊबे हुए कवि-मन का चित्रण हुआ है।

अच्छा

6/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि बेद लोक-लाज, आँकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है।
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रासनाम लेतु है॥

संदर्भ : व्याख्येय पद्यावतरण हिंदी साहित्य की रामभक्तिधारा के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के उत्तरकांड से उद्धृत है।

प्रसंग :- व्याख्येय पंक्तियों में तुलसीदास प्रभु 'राम' के प्रति अपने 'दास्य-भक्ति' भाव का प्रदर्शन कर रहे हैं।

व्याख्या :- तुलसी कहते हैं कि मैं मोह-मद के आवेग में डूब गया हूँ। मैं बुरी स्त्रियों के संगत में पड़ चुका हूँ। मैंने सारी लोक-लाज त्याग दी है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जो मुँह में आने में आये वो बोलता हूँ
मुझे जरा भी होश नहीं है।
मैं 'तुलसीदास' तो 'अजामिल' से भी अधम
अर्थात पापी हूँ।
अब मेरे उद्धार का एक बस 'रामनाम' ही
उपाय है।

तुलसी के राम पापियों के तारनहार हैं।

सौन्दर्य :
भाषा → अवधी की मिठास।
रस → भक्ति रस (दास्य-भक्ति) या नेदी-भक्ति।
अलंकार - अनुप्रास (मोह-मद-मात्यो)।
रूपक अलंकार।

विशेष :-
- 'नवधा भक्ति' के दास्य-भाव को तुलसी ने अपनाया, उसी का प्रदर्शन इन पंक्तियों में है।
- 'अजामिल' के पौराणिक संदर्भ से तुलना द्वारा स्वयं की निम्नता को दर्शाया है।
- 'रामनाम' की महिमा का बखान।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ : व्याख्येय पद्यावतरण छायावाद के सशक्त हस्ताक्षर महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित प्रसिद्ध हिंदी कविता "राम की शक्तिपूजा" से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में राम-रावण युद्ध के दौरान प्रारंभिक चरण में राम की सेना की हताशा को प्रकृति के वर्णन द्वारा दर्शाया गया है।

व्याख्या :
राम-रावण युद्ध में रावण की सेना लगातार मजबूत दिखायी पड़ रही है। ऐसे में सीता को न पाने की हताशा राम को विचलित कर रही है।
अमावस की रात्रि में आसमान ऐसा लग रहा है मानो अंधकार उगल रहा हो। पवन मानो दिशायें भूल कर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिमाहित उबाहित हो रही है। पीछे विशाल सागर लगातार गर्जना कर हताशा के वातावरण को और सघन कर रहा है। भूमि शांत है मानो ध्यान में मगन हो और केवल एक मशाल ही जलकर अंधकार को दूर करने का प्रयास कर रही है।

पंक्तियों में अंधकार व प्रकाश का द्वन्द्व है। यहाँ विचार संश्लिष्ट बिम्ब का सृजन हुआ है।

सौन्दर्य :

- भाषा - तत्सम बहुला खड़ी बोली
- रस → वीभत्स रस
- अलंकार - उपमा व रूपक अलंकार
  मानवीकरण अलंकार

विशेष :-

- पंक्तियाँ 'हताशा' के माहौल को दर्शाने वाली हैं।
- राम का यह संघर्ष, कई समीक्षकों के अनुसार निराला का स्वयं का आत्मसंघर्ष है। इन पंक्तियों में ऐसी ही संघर्ष की परिस्थितियों का वर्णन है।
- 'सरोज स्मृति' से आगे 'राम की शक्ति पूजा' में निराला संघर्ष से जूझ रहे, किंतु इसी कविता में आगे निराला के पास 'वह एक और मन रहा जो न थका' भी है, जो निराला की जिजीविषा को दर्शाता है।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश लोकप्रिय छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उत्तरार्ध जीवन में रचित गैर-पारंपरिक शैली में रचित कविता 'कुकुरमुत्ता' से उद्धृत है जिसमें वे 'जड़ प्रगतिवाद' का प्रतिरोध करते हैं।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कुकुरमुत्ते व गुलाब के प्रतीकों के मध्य वार्तालाप में कुकुरमुत्ता, 'गुलाब' की 'अभिजात्यता' पर प्रहार कर रहा है।

व्याख्या :-
कुकुरमुत्ता, गुलाब को देखकर कहता है कि 'गुलाब' को जिसने भी हाथ लगाया है, वह उसके काँटों का शिकार हुआ है। वह गुलाब की औरत और तबेले इत्यादि से तुलना कर उसे निम्नतर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साबित करने की कोशिश करता है।
'गुलाब' के सुखों के प्रति लगभग ईर्ष्या भाव के साथ कुकुरमुत्ता उसे राजाओं का प्रिय कहता है तथा साधारण जन से दूरी को लेकर मज़ाक बनाने की कोशिश करता है।

यहाँ निराला की लोक चिंता दिख रही है।

सौन्दर्य :-

- भाषा – 'निराला' की पारंपरिक भाषा शैली से अलग इन पंक्तियों में भाषा 'अदेप' प्रकृति की (ठेठ अंग्रेज़ी शब्द)
- प्रतीक-योजना – पूरी कविता "प्रतीकात्मक शैली" में ही लिखी गयी है। इन पंक्तियों में भी गुलाब-कुकुरमुत्ता के साथ ही नवेले जैसे प्रतीकों का प्रयोग
- वस्तुतः मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होते हुये भी 'निराला' 'जड़ प्रगतिवादी' का विरोध करते हैं। वे इस कविता में दर्शाते हैं कि साधारण की अपेक्षा का अर्थ सौंदर्य का विरोध नहीं है।
- समीक्षक डॉ. रेखा घरे ने इसे 'राम की शक्तिपूजा' की यात्रा का ही अगला चरण बताया है।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ।।

संदर्भ :- व्याख्येय पंक्तियाँ नवजागरण के दौर के प्रतिनिधि एवं राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित 'भारत-भारती' नामक प्रबंधात्मक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि विदेशी वस्तुओं के प्रचलन पर प्रहार करते हुये आम लोगों के हित में 'स्वदेशी' वस्तुओं के बाजार का अवगाहन करते हैं।

व्याख्या :-
कवि कहते हैं कि सभ्य तथा संभ्रांत परिवार भले ही विदेशी वस्तुओं को खरीदने में सक्षम हों, किंतु गाँव के गरीब-किसान परिवारों के लिये तो गाँव का 'हाट' अर्थात् स्थानीय बाजार ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ही उसका 'बड़ा बाजार' है।

वस्तुतः कवि विदेशी सामान मंगाने वाले लोगों पर कटाक्ष करते हुये उन्हें देश की वास्तविक स्थिति से अवगत कराने का प्रयास करते हैं। ताकि विदेशी धन-बहिर्गमन को रोका जा सके, यहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सके।

विशेष :

- 'नवजागरण' की भावना के अनुरूप राष्ट्र की समस्याओं पर इन पंक्तियों में भी चिंतन हुआ है।
- गुप्त जी 'अभिधात्मक शैली' में ही यह कविता लिखते हैं, ताकि देशवासियों के हृदय में उतर सकें। इन पंक्तियों में भी यही शैली है।
- पंक्तियों में 'तुकबंदी' अद्भुत लय उत्पन्न करती है। गुप्त जी ने स्वयं अपनी कविता को 'तुकबंदी' ही कहा है।
- तत्सम शब्दावली (अकिंचन), अंग्रेजी शब्दावली ('मार्कर') का प्रयोग द्रष्टव्य है।

पंक्तियों में उभरते [illegible] व विलासों की स्थिति का [illegible] है। प्रेमचंद के साहित्य भी इन भावनाओं से ओत-प्रोत है

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) सूर की काव्य-कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 20

सूर भक्तिकाल की कृष्णभक्ति काव्यधारा के सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रतिनिधि कवि। उनकी प्रसिद्धि का मूल आधार उनकी काव्य-कला है, जिसकी प्रशंसा आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रभृत समीक्षकों ने भी की है।

सूर की काव्य-कला का निदर्शन हम काव्य-शिल्प के निम्नलिखित तत्वों के आधार पर कर सकते हैं –

(i) भाषा :-

सूरदास ने 'भ्रमरगीत' सहित पूरा कृष्ण भक्ति काव्य 'ब्रजभाषा' में ही रचा है। सूर की 'ब्रजभाषा' प्रारंभिक होते हुये भी अत्यंत परिष्कृत है, जिसके कारण आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा -

" चलती हुई ब्रजभाषा में पहली रचना होने के बावजूद 'भ्रमरगीतसार' में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास की ब्रजभाषा का चरम स्तर दिखाई पड़ता है।"

उनकी परिष्कृत ब्रजभाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"निरखत अंक श्याम सुंदर के
बार-बार लावती छाती
लोचन जल कागद मसि मिलिकै
ह्वै गयी स्याम स्याम की पाती"

(ii) अलंकार-योजना :-

सूरदास की कविता में सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक उनकी अलंकार योजना है। शब्दालंकारों की बजाय उन्होंने अर्थालंकारों (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा) आदि का अधिक प्रयोग किया है।

- लोचन जल कागद मसि मिलिकै
  ह्वै गयी स्याम स्याम की पाती
  (यमक अलंकार)

- "मेरौ मन अनंत कहाँ सुख पावै
  जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै"
  (उपमा अलंकार)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अलंकार-योजना की प्रशंसा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि -

"सूरदास जब काव्य रचना के मैदान में उतरते हैं तो अलंकार-शास्त्र हाथ जोड़े उनके आगे दौड़ा करते हैं।"

हालाँकि अलंकारों के अति प्रयोग की आचार्य शुक्ल ने आलोचना भी की है –

"अंग एवं वेशभूषा के वर्णन में सूर को उपमा देने की सनक सी चढ़ जाती है।"

(iii) बिंब-योजना :-

यद्यपि 'बिंब-कला' को पाश्चात्य विद्वानों 'फ्लिंट' आदि ने आधुनिक काल में समीक्षा का मानदंड बनाया किंतु, इन से अनजान मध्यकाल में सूर के काव्य में 'बिंबों का नगर' देखने को मिलता है। -

"अति मलीन वृषभानु कुमारी
हरि श्रमजल अंतर तन भींजै, ता लालच ना धुवावति सारी"
(स्पर्श ~~सुकुमार~~ कोमल बिंब)

- "ऊधौ कोकिल कूजत कानन" (श्रव्य बिंब)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) प्रतीक-योजना :- सूरदास ने अपने काव्य में प्रतीकों के स्तर पर भी पर्याप्त वैविध्य का परिचय दिया है। वह भी तब जब वह नेत्रहीन थे।

" वह मथुरा काजर की कोठरी
जे आवहि ते कारे,
तुम कारे, सुफलक सुत कारे
कारे मधुप भँवारे'

उपरोक्त उदाहरण में 'काजल की कोठरी' का प्रतीक द्रष्टव्य है।

(v) वाग्विदग्धता :- 'उपालंभ-काव्य' के रूप में 'भ्रमर-गीत' में संपूर्ण हिंदी साहित्य के इतिहास में वाग्विदग्धता का चरम रूप दिखाई पड़ता है -

- " उर में माखन-चोर गड़े,
अब कैसेहूं निकसति नाहिं, तिरछे ह्वै ज्युं अड़े।'
- निर्गुन कौन देस को बासी xxx
को है जनक, जननी को कहियत
कौन नारी को दासी।"

इस रूप में स्पष्ट है कि सूर की काव्य-कला हिंदी की कृष्ण भक्ति धारा में सर्वश्रेष्ठ है।

गेयता व संगीतात्मकता का उल्लेख करें

बढ़िया

अच्छा

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में अपने समय की अनुगूँज सुनाई देती है।' इस मत के संदर्भ में कुरुक्षेत्र के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' तत्कालीन समय की एक बड़ी समस्या - 'युद्ध' के संबंध में शंकाओं के समाधान का प्रयास करती है।

'कुरुक्षेत्र' से पूर्व दिनकर ने 'उर्वशी' में 'काम' की समस्या तथा 'रश्मिरथी' में 'कर्ण' के माध्यम से कर्म की महत्ता को स्थापित करने का सफल प्रयास कर चुके थे।

स्वयं 'दिनकर', 'कुरुक्षेत्र' की भूमिका में कहते हैं कि "'कलिंग-युद्ध' कविता लिखते समय मुझे अशोक के हृदय परिवर्तन और 'युद्ध' के प्रति उनके निर्वेद भाव ने आकर्षित किया।" वे कहते हैं कि उसी ने उन्हें महाभारत-युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर की मनःस्थिति पर विचार करने को प्रेरित किया और 'युधिष्ठिर' को केंद्र में रखकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भीष्म - युधिष्ठिर संवाद के माध्यम से अतीत 'युद्ध' से जुड़े कुछ मौलिक प्रश्नों का जवाब ढूँढने का प्रयत्न किया है।

वस्तुतः स्वतंत्रता-संग्राम व विश्व-युद्धों के पश्चात 'युद्ध' व हिंसा के संबंध नैतिक प्रश्न खड़े किये जा रहे थे। दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र' में इन्हें ही दूर करने का प्रयास किया है।

'कुरुक्षेत्र' में दिनकर के अनुसार युद्ध सामान्य परिस्थिति में अकाम्य है, किंतु हिंसा व अन्याय के विरुद्ध यदि शांति-स्थापना के लिये युद्ध भी करना पड़े, तो वह काम्य व नैतिक है -

" छीनता हो स्वत्व कोई और तू
त्याग तप से काम ले, यह पाप है
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है"

'कुरुक्षेत्र' में युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर 'निर्वेद भाव' से जीवन के प्रति विरक्ति दिखाते हैं, तो भीष्म कहते हैं -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"व्यक्ति का है धर्म तप, करुणा, क्षमा
व्यक्ति की शोभा विनय भी, त्याग भी
किंतु जब प्रश्न उठता समुदाय का
त्यागना पड़ता है तब, धर्म और त्याग भी"

भीष्म कहते हैं युद्ध की जिम्मेदारी पीड़ित पक्ष की नहीं, बल्कि अन्याय करने वाले की है -

"चुराता न्याय को जो, रण को बुलाता भी वही
युधिष्ठिर स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं"

कविता के अंतिम सर्ग (7वें सर्ग) में भीष्म के माध्यम से 'दिनकर' मानववाद के अपने विचार को प्रक्षेपित करते हैं तथा 'विश्व मूलक न्याय' का आह्वान करते हैं -

" जब तक मनुज मनुज का,
सुख भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा।।"

इस रूप में 'कुरुक्षेत्र' का मूल 'प्रतिपाद्य' शांति के लिये 'युद्ध' को न्यायोचित ठहराना तथा मानववाद की स्थापना करना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कामायनी व पूंजीवादी शोषण-व्यवस्थाओं को उत्तेय दूर है

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना की महानता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि वह रचना अपने देश-काल-वातावरण का अतिक्रमण कर किसी भी कालखंड में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने में कितनी सफल है।

इस दृष्टिकोण से यदि सूरदास के 'भ्रमरगीत' का आंकलन करें तो ऊपरी तौर पर, तो यह उद्धव व गोपियों का वाग्विदग्धता पूर्ण संवाद नजर आता है।

किंतु आधुनिक दौर में विजयदेव नारायण साही, रामविलास शर्मा प्रभृत कई समीक्षकों ने प्रतीकात्मक तौर पर वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया है।

वस्तुतः आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति का विश्लेषण करें, तो पाते हैं कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नेता चुनाव जीतने के लिये आमजन के बीच लोकप्रियता को भुनाते हैं। 'भ्रमरगीत' में कृष्ण भी गोपियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं।

वहीं चुनाव जीतने के पश्चात नेता जाकर राजधानियों में बैठ जाते हैं और क्षेत्र की ओर लौटकर नहीं आते हैं।
कृष्ण भी वृंदावन से जाकर मथुरा में ही बस गये हैं।

वहीं जब नेता को जनता की नाराजगी का आभास होता है, तो वह बिचौलिये नेताओं को जनता के पास भेजते हैं ताकि जनता का गुस्सा इन नेताओं पर ही निकल जाये।
कृष्ण को भी जब गोपियों की नाराजगी का पता चलता है, तो वे उद्धव को भेजते हैं।
हालांकि सूरदास ने संकेत किया है कि कृष्ण ने उद्धव को नीरस ज्ञान मार्ग को त्यागकर सरस प्रेम मार्ग को अपनाने के लिये गोपियों के बीच भेजा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालाँकि गोपियों के माध्यम से 'राजनीति' पर कटाक्ष 'भ्रमरगीत' में दिखते हैं

"हरि है राजनीति पढ़ आये
इक अति चतुर हुते पहले ही, अरु कही तेरे सिखये
जानि बुद्धि बड़ी जुवतिन की, जोग संदेश पठाये।"

वहीं उद्धव व कृष्ण पर नाराज होते हुये गोपियाँ कहती हैं-

" वह मथुरा काजर की कोठरि
जे आवहिं ते कारे,
तुम कारे, सुफलक सुत कारे
कारे मधुप भँवारे "

बढ़िया उदाहरण

9/15

इस रूप में हालाँकि प्रत्यक्ष तौर पर राजनीतिक प्रतीक 'भ्रमरगीत' पर आरोपित नहीं होते हैं, हालाँकि नीति संदर्भ में ये प्रतीक अनायास ही उद्धव-गोपी प्रसंग जुड़ जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Viston Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Viston Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी में निहित 'बिंब-सौंदर्य' का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है।'- कुरुक्षेत्र के आधार पर इस मत पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'असाध्य वीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्य वीणा' अज्ञेय द्वारा रचित उनकी प्रतिनिधि रचना है। चूँकि अज्ञेय गैर-रोमांटिक कवि हैं, अतः 'असाध्य वीणा' की रचना उन्होंने रोमांटिक भाव बोध से नहीं की, बल्कि इसके पीछे 'अज्ञेय' का गहन चिंतन एवं विचार संपदा थी।

हिंदी समीक्षा में यह भ्रम रहा है कि 'असाध्य वीणा' में मूलतः 'सृजन तत्व' की व्याख्या करने का प्रयास अज्ञेय ने किया है।

इस संबंध में स्वयं अज्ञेय ने भी कविता के संबंध में 'सृजन-तत्व' के प्रति अपनी निष्ठा को स्वीकार किया है।

वस्तुतः अज्ञेय पर 'जैन बौद्धमत' के 'योगाचार विज्ञानवाद' या 'शून्यवाद' का प्रभाव था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैन बौद्धमत का विचार है कि सृजन-तत्व कहीं बाहर नहीं बल्कि व्यक्ति के भीतर ही है।

इसी विचार को 'अज्ञेय' ने 'असाध्य वीणा' में 'किरीट तरु' से बनी वीणा एवं केशकंबली के माध्यम से प्रक्षेपित करने का प्रयास किया है।

'असाध्य वीणा' में 'सृजन-तत्व' की व्याख्या चार चरणों में दिखायी पड़ती है - सृजन-तत्व की प्राप्ति के लिये अर्हता, प्रक्रिया, सृजन-तत्व का स्वरूप तथा इसका प्रभाव।
कविता में इन्हीं 4 चरणों का प्रक्षेपण दिखायी पड़ता है।

(i) सृजन-तत्व के लिये अर्हता :

वस्तुतः 'सृजन-तत्व' के साक्षात्कार के लिये प्राथमिक अर्हता है अपने अहंकार का विलयन। अहंकार के नाश

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कोई भी 'वीणा' को साध नहीं सका -
"मेरे हार गये सब जाने माने कलावंत
सब की विद्या हो गई अकारथ दर्प-चूर"

(ii) प्रक्रिया :
अहंकार के विलयन की प्रक्रिया है स्वयं को सृजन-तत्व के समक्ष पूर्ण रूपेण समर्पित कर देना -

"मौन प्रियंवद साध रहा था,
नहीं स्वयं अपने को शोध रहा था।"

वास्तव में वीणा को साधने की प्रक्रिया बाहरी न होकर आंतरिक है।
प्रियंवद अपनी लघुता स्वीकार करते हुये 'सृजन-तत्व' के समक्ष पूर्ण समर्पण कर देता है -
"तू उतर बीन के तारों में
अपने को गा, अपने से गा"

(iii) स्वरूप :-
सृजन-तत्व का स्वरूप आंतरिक होकर भी अत्यंत विराट है। अज्ञेय ने इसे 'ब्रह्म' के समान माना है। भारतीय परंपरा में भी रस-निष्पत्ति को 'ब्रह्मानंद सहोदर' माना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

गया है —

"नहता वीणा झनझना उठी
×××
अवतरित हुआ संगीत स्वयम्भु
अशेष प्रसन्नमय"

यह सृजन-तत्व वास्तव में मौन रहकर भी सबके भीतर समाहित रहता है —

सुना आपने जो वह मेरा नहीं
वह तो सब कुछ की तथता थी ×××
महाशून्य, वह महामौन,
अनाप, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन सब में गाता है

(iv) प्रभाव :- सृजन-तत्व का प्रभाव सभी पर अपने-अपने स्वधर्म के अनुसार पड़ा है —

"डूब गये सब अतग-अलग
एकाकी पार तिरे"

जहाँ राजा को 'संतुष्टि' की ध्वनि, वहीं रानी को 'दायित्वमुक्त प्रेम' सुनायी दिया। वहीं अन्य को अन्न की सोंधी गुदगुद, जब वधू की पायल-ध्वनि इत्यादि सुनायी दिये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

'बादल को घिरते देखा है' जनवादी कवि नागार्जुन की प्राकृतिक सौंदर्य बोध को दर्शाती एक प्रसिद्ध कविता है।

यद्यपि नागार्जुन प्रगतिवादी साहित्यकार हैं तथा प्रगतिवादी साहित्यकारों में शिल्प के प्रति आग्रह कम दिखायी पड़ता है। वे रूप (फार्म) की अपेक्षा वस्तु (कंटेंट) को अधिक महत्व देते हैं।

नागार्जुन ने भी अपनी अनेक कविताओं जैसे 'हरिजन गाथा' तथा 'अकाल और उसके बाद' में शिल्प से अधिक महत्व दिया है।

हालाँकि नागार्जुन 'जड़ मार्क्सवादी' नहीं हैं, इसलिये शिल्प के प्रति उनका कोई पूर्वाग्रह नहीं है। 'बादल को घिरते देखा है' में उन्होंने जड़ मार्क्सवाद का अतिक्रमण करते हुये प्रकृति के सौंदर्य का यथार्थवादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वर्णन किया है। वहीं शिल्प के स्तर पर भी इस कविता में नवीन दृष्टि दिखायी पड़ती है—

(i) भाषा :-
इस कविता में नागार्जुन ने प्रगतिवाद के ऊपर छायावादी भाषा-शैली में प्रकृति सौंदर्य का वर्णन किया।
इसमें उनकी भाषा 'तत्समी शैली' की दिखायी पड़ती है, जो अपने स्वरूप में निराला और प्रसाद के निकट दिखाई पड़ती है—

अमल धवल गिरी के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है

छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन
कमलों पर गिरते देखा है।

(ii) काव्यरूप :- कविता मध्यम आकार की लंबी कविता है। हालाँकि उसमें कोई कथात्मक प्रबंधात्मकता नहीं है, किंतु इसे मुक्तक-काव्य की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) बिंब-योजना : यद्यपि नागार्जुन ने हिमालय का यथार्थवादी वर्णन करने का प्रयास किया है। किंतु हिमालय का यह यथार्थवादी वर्णन भी बिंब की दृष्टि से सक्षम बन पड़ा है—

" जाने दो वह कवि कल्पित था
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।"

(विराट बिंब, श्रव्य बिंब)

(iv) प्रतीक-योजना :
हालाँकि कवि ने प्रतीकों का प्रयोग कम ही किया है किंतु कहीं-कहीं 'मोती' आदि जैसे प्रतीक दिखायी देते हैं—
" छोटे-छोटे मोती जैसे "

(v) छंदात्मकता/लयात्मकता :- छायावादोत्तर काव्य छंद-मुक्ति का दौर है, लेकिन इस कविता में पूरी कविता में छंद रहित होते हुए भी लयात्मकता बनी रहती है। 16 मात्राओं के बाद 'बादल को घिरते देखा' का टेक कविता में गीतात्मक प्रवाह को उत्पन्न करता है।

टीकाकारों नाद व गति का ध्यान नहीं।

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'ब्रह्मराक्षस', मुक्तिबोध की एक अत्यंत लोकप्रिय 'प्रतीकात्मक कविता' है।

वस्तुतः यह कविता, मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कहानी 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' तथा कविता 'अँधेरे में' का अगला चरण है।

इन सभी रचनाओं में मुक्तिबोध ने 'ब्रह्मराक्षस' के मिथकीय प्रतीक का प्रयोग किया है।
वस्तुतः 'ब्रह्मराक्षस' के माध्यम से कवि 'मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी' के आत्मसंघर्ष का प्रक्षेपण करना चाहता है।

मिथक के अनुसार ब्रह्मराक्षस, अपने ज्ञान को शिष्यों को हस्तांतरित न कर पाने के कारण 'प्रेत-योनि' में भटकता रहता है।

वस्तुतः यही हालत मध्यमवर्गीय 'बुद्धिजीवी' के रूप में कवि की भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वह आत्मचेतस व विश्व चेतस होने के मध्य लगातार संघर्षरत है -

"आत्मचेतस किंतु इस मन में भी
प्राणमय अनबन
विश्वचेतस बेबनाव"

मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी विश्व के हित में अपना ऐतिहासिक उत्तरदायित्व न निभा पाने के कारण आत्मग्लानि से जूझ रहा है।

बुद्धिजीवी वर्ग की विडंबना यह है कि वे वैचारिक लड़ाई तो लड़ते हैं, किंतु धरातल पर कोई योगदान नहीं देते -

"वह कोठरी में अपना गणित
करता रहा
और मर गया"

वास्तव में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर शिष्य इसीलिये होना चाहता है कि वह उसके 'आत्मचेतस' होने के महत्व को समझा सके

" मैं मिलता उन दिनों उससे
तो बताता महत्व
उसके होने का .. "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वास्तव में 'ब्रह्मराक्षस' और उसका 'सजल-उर शिष्य' दोनों एक व्यक्ति के आत्मचेतस व 'विश्वचेतस' मन का प्रतीक है, जैसा कि समीक्षक श्रीकांत वर्मा ने व्याख्या की है।

'सजल-उर-शिष्य' बनकर कवि खुद को ही यह बताना चाहता है कि आदर्शवादी पूर्णतायें वास्तविक जीवन में संभव नहीं है –

" वे आवयोजित, तर्कयोजित
कार्य-सामंजस्य योजित
अतिरिक वादी पूर्णतायें
हम छोड़ दें उसके लिये "

इस रूप में कवि अपने आत्मसंघर्ष रत मन को 'आत्मचेतस' व 'विश्वचेतस' होने के मध्य संतुलन की प्रेरणा देने के लिये ही ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य होना चाहता है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ। ...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है! ओह! शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श!

संदर्भ-प्रसंग : व्याख्येय गद्यांश आधुनिक हिन्दी नाट्य-कला के प्रकाश-स्तंभ मोहन राकेश के लोकप्रिय नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में नाटक की नायिका मल्लिका एवं उसकी माता अंबिका के मध्य वार्तालाप हुआ है।

व्याख्या : मल्लिका आषाढ़ की प्रथम वर्षा में भीगने के अपने उल्लासपूर्ण अनुभव को माँ के साथ साझा करते हुये कहती है कि वर्षा की बूँदों ने उसे अद्भुत आनंद दिया है। वह इस अनुभव को सदा अपने हृदय में संजोये रखना चाहती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष :

- भाषा, वातावरण एवं ऐतिहासिक संदर्भों के अनुरूप तत्सम्मी होते हुये भी अत्यंत कोमल एवं संप्रेषणीय है।
- भाषा में नाटकगत संवाद शैली स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती है।
- नील कमल, वक्र एवं व्यजन के प्रतीकों के प्रयोग ने भाषा को जानदार एवं प्रवाहमयी बना दिया है।

प्रासंगिकता :

वर्तमान दौर में शहरीकरण व भौतिकवादी संस्कृति के अंधानुकरण के विपरीत ये पंक्तियाँ प्रकृति के सौंदर्य एवं उसके साक्षात्कार से मिलने वाले आनंदपूर्ण अनुभवों को रेखांकित करती है।

G.A
6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्त्री जीवन की पूर्ति नहीं, जीवन की पूर्ति का एक उपकरण और साधन मात्र है। सामर्थ्यवान, सफल मनुष्य अनेक स्त्रियाँ प्राप्त कर सकता है, परन्तु सफलता के अवसर जीवन में अनेक नहीं आते। पुत्र, संसार में बल ही प्रधान है; धन-बल और जन-बल। तुम मद्रगण के राजा गणपति की कृपा की उपेक्षा कर वृद्ध देवशर्मा की कृपा पर निर्भर रहना चाहते हो? पुत्र, तुम नीतिवान हो, विचार करो, यवन गणपति की पौत्री से विवाह कर तुम अनायास, बिना किसी विरोध के महाकुलीन सामन्त बन जाओगे, परन्तु देव शर्मा की प्रपौत्री से विवाह की इच्छा करने पर, उदार देव शर्मा के आपत्ति न करने पर भी, सम्पूर्ण द्विज समाज को अपना शत्रु बना लोगे। द्विजवर्ग की सत्ता, इतर जन की हीनता और इतर जन से सेवा प्राप्त करने के अधिकार पर आश्रित है। इतर जन को अपने समान बना लेने पर उनका विशेष अधिकार क्या रह जायगा? इतर जन का सशक्त होना उन्हें स्वीकार नहीं, परन्तु समर्थ की सत्ता वे भी अस्वीकार नहीं कर सकते। हम किसी को शत्रु क्यों बनायें? पुत्र, हमें शत्रुओं की नहीं, मित्रों और सहायकों की आवश्यकता है।

संदर्भ : व्याख्येय गद्यावतरण, प्रसिद्ध मार्क्सवादी साहित्यकार यशपाल द्वारा रचित लोकप्रिय ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में श्रेष्ठि प्रेस्थ दिव्या के प्रेम-पाश में आबद्ध अपने पुत्र पृथुसेन को समझाने की चेष्टा कर रहे हैं—

व्याख्या : प्रेस्थ नारी के प्रति तिरस्कारपूर्ण नजरिया दिखाते हुये कहते हैं कि स्त्री, पुरुष के जीवन की मात्र एक साधन है, साध्य नहीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमघन के अनुसार यदि पुरुष सफल है, तो उसे अनेक स्त्रियाँ मिल सकती है। किंतु सफलता के अवसर जीवन में सदा-कदा ही आते हैं।

साथ ही अपने निम्न सामाजिक स्तर की ओर इशारे करते हुये आगे कहता है कि द्विजा से विवाह करने पर सम्पूर्ण ब्राह्मण वर्ग उनके विरुद्ध हो जायेगा, जिससे उन्हें धन-संपदा से वंचित होना पड़ सकता है।

विशेष :

- प्रेमघन के माध्यम से नारी के प्रति 'भोगवादी नजरिये' को प्रदर्शित किया गया है।
- पुरुषवादी समाज की झलक इन पंक्तियों में दिखती है, जहाँ नारी केवल उपकरण है।
- वहीं इन पंक्तियों में तत्कालीन समाज में व्याप्त 'श्रेणी-क्रम' व्यवस्था को भी दर्शाया गया है, जो भेदभाव पर आधारित है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

संदर्भ - उपरोक्त पंक्तियाँ आधुनिक नवजागरण के अग्रदूत एवं भारतेंदु युग के प्रतिनिधि साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र के कालजयी नाटक 'भारत-दुर्दशा' से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में 'एडीटर' नामक पात्र के कथन को लिया गया है।

व्याख्या :-

'भारत-भाग्य' नामक पात्र की दुर्दशा पर 'एडीटर' सुझाव देते हुये कहता है कि हमें 'एडूकेशन' की सेना और 'कमेटी' बनानी चाहिये। जहाँ अखबारों व स्पीचों को हथियार के रूप में प्रयोग कर भारत की दुर्दशा को दूर करेंगे।

वस्तुतः इन पंक्तियों के माध्यम से भारतेंदु ने 'बुद्धिजीवी वर्ग' तथा तत्कालीन पत्रकार-वर्ग पर व्यंग्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किया है, जो देश की दुर्दशा के वास्तविक कारणों की पड़ताल करने के बजाय छद्म ढकोसलों का सहारा लेना चाहते हैं।

विशेष :

- 'भारत-दुर्दशा' नाटक का उद्देश्य वस्तुतः भारतीय पुनर्जागरण का है। इन पंक्तियों में व्यंग्यात्मक तरीके से समाधान के छद्म प्रयासों पर कटाक्ष किया गया है।
- अमूर्त विषयों का मानवीकरण किया गया है, ताकि व्यंग्य की तीव्रता को बढ़ाया जा सके - जैसे - 'एडूकेशन की सेना', 'स्पीचों के गोले'।
- भाषा के प्रति भारतेंदु ने कोई आग्रह नहीं रखा है, जो इन पंक्तियों में भी द्रष्टव्य है, उदा. - एडूकेशन (अंग्रेजी) कमेटी, स्पीच (अंग्रेजी)।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

संदर्भ - उपरोक्त गद्यावतरण हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के निबंध-संकलन 'चिंतामणि' में संकलित 'कविता क्या है' निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में निबंधकार कविता की विशेषताओं तथा उसके प्रभावों की चर्चा कर रहे हैं।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि कविता का कार्य केवल वस्तुगत सौंदर्य दर्शाना नहीं बल्कि यह मनुष्यों के कर्मों एवं मन की भावनाओं का उद्घाटन भी करती है।

कविता जिस प्रकार नारी के मुख के सौंदर्य का वर्णन करती है, वैसे ही वह उदारता, वीरता, त्याग, प्रेम जैसे भावों के सौंदर्य का वर्णन कर पाठक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के हृदय को शीतलता प्रदान करती है

विशेष :

- शुक्ल जी की निबंधशैली अत्यंत प्रभावकारी है, जिसका निदर्शन इन पंक्तियों में किया जा सकता है।
- शुक्ल जी मनोविश्लेषवादी निबंधकार हैं, इन पंक्तियों में भी वे कविता के मानसिक भावों पर ध्यान की व्याख्या करते हैं।
- भाषा अत्यंत गठीली, अर्थव्यंजक तथा प्रांजल है।
- भाषा में कथ्य के अनुरूप तत्समीकरण द्रष्टव्य है।
- स्कंदगुप्त नाटक में 'मातृगुप्त' नामक चरित्र भी कविता की ऐसी ही विशेषताएँ दर्शाता है- " कवित्व वर्णमय चित्र है, जो सदा भावपूर्ण संगीत गाया करता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिंदी की आँचलिक उपन्यासधारा के प्रतिनिधि उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'आँचलिक उपन्यास' के सर्वोत्तम मानक के रूप में स्थापित हो चुके 'मैला आँचल' नामक उपन्यास से उद्धृत है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में उपन्यास के सशक्त पात्र डॉ. प्रशांत के विचारों को उद्धृत किया गया है।

व्याख्या :- प्रशांत, जो मेरीगंज के वातावरण में रच-बस चुका है। उसका यहाँ के लोगों से भावनात्मक जुड़ाव हो चुका है। वह अमेरिका जाना चाहता था किंतु अब वह 'मेरीगंज' में ही भारत माता के 'मैले आँचल' के तले 'प्यार के पौधे लहलहाना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चाहता है। वह सोचता है कि व्यक्ति का 'दिल' ही है, जो उसे भावनात्मक बंधनों में बाँधता है। यह वह 'हार्ट' नहीं जो उसने मेडिकल की किताबों में पढ़ा था, बल्कि यह एक अस्पर्शीय, केवल महसूस करने लायक वस्तु है, जिसकी दवा 'एड्रिनेलिन' भी नहीं है।

विशेष :-

- संवाद, 'चेतनाप्रवाह शैली' में है, जो प्रशांत की आंतरिक उधेड़बुन को प्रदर्शित करता है।
- भाषा अत्यंत प्रभावी एवं डॉ. प्रशांत के शहरी-शिक्षित पात्र के अनुरूप आंग्लकृत है। उपन्यास के अन्य पात्रों की भाँति यह 'आंचलिक भाषा' नहीं है।

सूत्र-शैली का प्रयोग -
"दिल वह मंदिर ---- देवता वास करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धनिया प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद द्वारा 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' निबंध वस्तुतः 1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अधिवेशन में इनका अध्यक्षीय उद्बोधन है। इसी कारण से यह निबंध 'उद्बोधन शैली' में है।

इस निबंध में प्रेमचंद साहित्य के उद्देश्य एवं उसके स्वरूप के संबंध में कुछ मान्यताएँ प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें आज भी साहित्य के क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में देखा जाता है।

(i) प्रेमचंद के अनुसार साहित्यकार को सदैव प्रगतिशील होना चाहिये -

" साहित्यकार स्वभावतः प्रगतिशील होता है, यदि वह प्रगतिशील नहीं होगा, तो साहित्यकार ही नहीं होगा "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) प्रेमचंद के अनुसार साहित्यकार का उद्देश्य समाज एवं मनुष्य की भलाई होना चाहिये। रोमांचक व मनोरंजनकारी साहित्य को वे खारिज करते हैं।

" मैं और चीजों की तरह साहित्य को भी उपयोगिता की तराजू पर तौलता हूं।

(iii) प्रेमचंद साहित्यकार के उद्देश्य व कार्य को निर्धारित करते हुये कहते हैं-

" वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाते हुये चलने वाली सच्चाई है।

(iv) प्रेमचंद कहते हैं कि साहित्यिक प्रतिभा मूलतः तो जन्मजात होती है किंतु अभ्यास के द्वारा इस

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतिभा को और परिमार्जित किया जा सकता है।

(v) साहित्य-कर्म को प्रेमचंद वस्तुतः सेवा मानते हैं, धनार्जन का साधन नहीं-

" जिन्हें धन-वैभव प्यारा है, साहित्य-मंदिर में उनके लिये कोई स्थान नहीं है।"

(vi) वहीं भाषा के संबंध में भी प्रेमचंद कहते हैं कि अभिजात्यतावादी न होकर साधारण जनमानस को समझ में आने वाली होनी चाहिये।

इस रूप इस निबंध में कही गयी बातें साहित्य के क्षेत्र में मार्गदर्शक सिद्धांतों व घोषणापत्र के रूप में स्थापित हुई, जिनका आगे चलकर कई साहित्यकारों ने अनुसरन किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी निबंध कला के प्रतिनिधि निबंधकार हैं। इनकी निबंधकला का सर्वोत्तम स्तर 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध में प्रदर्शित हुआ है।

श्रद्धा-भक्ति वस्तुतः एक मनोविकार परक निबंध है। इस निबंध में शुक्ल जी ने 'श्रद्धा' और 'भक्ति' - इन दो भावों का विस्तृत वर्णन किया है। इन दो भावों के साथ ही शुक्ल जी ने 'प्रेम', 'लोभ', 'ईर्ष्या' इत्यादि भावों पर भी लेखनी चलाई है।

निबंध का आरंभ शुक्ल जी, 'श्रद्धा' की परिभाषा से करते हैं।
" किसी व्यक्ति में जनसाधारण से विशेष गुण देखकर उसके संबंध में जो स्थायी आनंद का भाव हृदय में स्थापित होता है उसे ही 'श्रद्धा' कहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आगे वे प्रेम व श्रद्धा के मध्य अंतर को दर्शाते हैं।

वे कहते हैं कि प्रेम के लिये किसी निश्चित कारण की आवश्यकता नहीं होती, वहीं श्रद्धा व्यक्ति के गुण व कर्म देखकर उत्पन्न होती है।

वे श्रद्धा के 3 प्रकारों का वर्णन भी करते हैं- प्रतिष्ठा संबंधिनी, प्रीति संबंधिनी तथा साधन-संपत्ति संबंधिनी।

इसी क्रम में वे 'भक्ति' भाव पर चर्चा कर श्रद्धा के साथ संबंध को दर्शाते हैं। वे लिखते हैं-

"श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।"

वे भक्ति को श्रद्धा से अधिक सक्रिय भाव के रूप में व्याख्यायित करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आगे चलकर वे 'श्रद्धा' के लाभों की ओर इशारा करते हैं। वे कहते हैं कि श्रद्धा से 'अद्वैत' का उत्साहवर्धन होता है, जिससे समाज का कल्याण होता है।

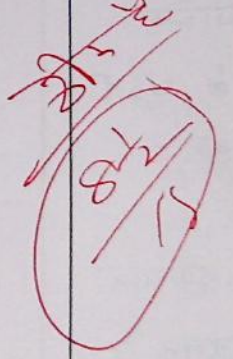

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महाभोज 1970s के दशक में मन्नू भंडारी द्वारा लिखा गया एक राजनीतिक उपन्यास है, जिसमें उपन्यासकार ने तत्कालीन जघन्य 'बेलछी काण्ड' की पृष्ठभूमि में राजनीतिक विद्रूपताओं, सामाजिक विकृतियों एवं बुद्धिजीवी वर्ग के छद्म बुद्धि-विलास के नग्न चित्र को प्रस्तुत किया है।

'दा साहब' इस उपन्यास के प्रमुख चरित्र है, जिनके माध्यम से लेखिका ने राजनेताओं के दोगलेपन को उजागर किया है।

'दा साहब', जो एक प्रांत के मुख्यमंत्री है, वे राजनीति के लिये दिखावा करते-करते एक इतने गहरे बनावटी आचरण की चादर ओढ़ चुके हैं कि हम किसी को भी उनके वास्तविक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के बारे में पता नहीं है -

" बात को अपने से मारना, अपने मन में होने वाली उथल-पुथल से काटकर कैसे कहा जाता है, यह गुर कोई दा साहब से सीखे।"

बिसू की हत्या करने वाला जोरावर इनका ही आदमी है, लेकिन वे उसे बचाना चाहते हैं। लेकिन वोट बैंक की राजनीति के लिये सरोहा जाकर बिसू के पिता 'हीरा' को अपनी कार में बिठाकर सहानुभूति ग्रहण करना चाहते हैं-

" यह दृश्य देखकर गाँव के बड़े-बुजुर्गों को शबरी - निषाद की कथायें याद हो आईं"

वे चुनाव जीतने के लिये हर भ्रष्ट तरीका अपनाते हैं। पत्रकार दत्ता साहब को कम कीमत पर कागज उपलब्ध करवाना हो या फिर डी.आई.जी.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सिन्हा की पदोन्नति - वे "राजनीति - पत्रकार - अधिकारी - अपराधी" के जटिल गठजोड़ को हर कदम मजबूत करते नजर आते हैं।

लेकिन इसके बावजूद बाहरी दुनिया में वे एक ईमानदार एवं लज्जन राजनीतिज्ञ की छवि बनाये रखना चाहते हैं।

वस्तुतः 'दा लास्ट बॉस' के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि जब राजनीति में मुद्दों से हटकर दिखावे एवं भावनाओं का महत्व बढ़ जाता है, तो राजनेता कैसे दोगलेपन की चादर को ओढ़कर जनता को बेवकूफ बनाते हैं।

यह न केवल तत्कालीन दौर में बल्कि आज भी राजनेताओं के चरित्र को जालंधिक तौर पर दिखाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation